✍ काव्य खंड

ललन चतुर्वेदी की कविताएं

दु:ख मेरा सहोदर भाई है

वह मेरे जन्म के ठीक अगले पल में पैदा हुआ
उसे देख मैं रो पड़ा
उसके जन्म से बेखबर आसपास खड़ी स्त्रियों ने हँसकर मेरा जन्मोत्सव मनाया
सबने मेरी माँ को बधाई दी

कभी किसी को भनक तक नहीं लगी और वह मेरे साथ - साथ पलता रहा
उसे माँ के दूध की कभी जरुरत महसूस नहीं हुई
वह मेरी खुशियों को पीकर घूमता रहा मदमस्त
जब कभी आते मेरे जीवन में खुशियों के मौके
वह आ धमकता अनामंत्रित हिस्सेदार की तरह

वह वास्तव में मुझसे छोटा था
इस नाते मेरे प्यार का अधिकारी था
कैसे कर सकता था मैं उसके अनिष्ट की कामना
जब भी मिला मैंने हँस कर उसका स्वागत किया

उसने कभी मेरे साथ धोखा नहीं किया
मैंने भी उसका पूरा- पूरा हक दिया
उसने भी अनुज होने का फर्ज निभाया
मेरे जाने के बाद ही विदा हुआ

दुःख मेरा सहोदर भाई था
मैं देख भी कैसे सकता था, उसे पहले जाते हुए।

खोज

कुछ भी तो भुला नहीं
फिर भी सबके सब लगे हैं खोज में
हर समय खोज रहे हैं लोग कुछ न कुछ
यह जिज्ञासा समय है
थकी अंगुलियां अनुनयरत
कांप रही हैं थर- थर-
इतना मत लो हमसे काम

सदियों से लोग खोज रहे हैं
देवताओं ने तो खोज में कर दिया था समुद्र - मंथन
लगे थे दानव भी साथ
सब जानते हैं किसको क्या लगा हाथ

यह जानने की पिपासा
हमें धकेल रही है रेगिस्तान में
हम खोज रहे हैं एक - दूसरे को अनवरत
ढूंढे जा रहे हैं अपरिचित और परिचित भी

हम खोज रहे हैं सिक्ता में स्वर्ण

धूप में चलते-चलते हो गए हैं विवर्ण
अपनी त्वचा को चमकाने के लिए करना चाहते हैं जतन
विविध विषय, अनंत क्षेत्र हैं हमारी खोज की
परिधि में
हमें महारत है समर्थ प्रविधि में
हमें विश्वास अर्जित करना है ससाक्ष्य
हम भरोसा नहीं कर सकते आंख मूंद कर
हमें भरोसा नहीं रहा पवन और पानी पर
हमें भरोसा नहीं रहा अन्न और वनस्पतियों पर
हम ढूंढ रहे हैं हर पल एक बेहतर विकल्प
हम ढूंढ कर ही मानेंगे सर्वोत्तम ?

हम ढूंढ रहे गांव में शहर ,शहर में गांव
शहर में महानगर , महानगर में शहर
भारत में अमरीका ,अमरीका में भारत
छांव में धूप,धूप में छांव
हम बेचैन हैं विकसित करने के लिए
ढूंढने के उन्नत से उन्नत उपकरण
मुझे अलगाना है हम से मैं
बढ़ने लगा है खुद के खोने का भय
यहां सब ढूंढ रहे हैं एक-दूसरे को
मुझे ढूंढ रही है मेरी पत्नी
मैं पत्नी को ढूंढ रहा हूं

मैं ढूंढ रहा हूं, बच्चों को , दोस्तों को
जरूर,वे भी ढूंढ रहे होंगे मुझे
आखिर कहां खो गए सब के सब
सबको ढूंढते -ढूंढते सचमुच खो गया हूं
मेरा पता चले कभी तो इत्तिला करना।

उसके जाने से कोई क्षति नहीं हुई है

अब वह चले गए हैं
सारी क्रियाएं बहुवचन हो गईं हैं
शब्दकोश के समस्त सम्मानसूचक शब्द
शोक सन्देशों में सितारे की तरह टॉक दिये गए हैं
जो तरसते रहे प्रेम के एक गुलाब के लिए
उन्हें पुष्पों से आच्छादित कर दिया गया है

वह कह रहे हैं- "अब तो बख्श दो मेरे भाई!
मत गढ़ो मेरे बारे में तरह- तरह के झूठ
मैं स्वर्ग नहीं जा रहा
मत कहो मुझे महान आदमी
मेरे हिस्से के सच को झूठ बनाकर मत बोलो
मैं बहुत सुकून से हूँ,निकल आया हूँ भीड़ से
मुझे सोने दो आराम से चिर निद्रा में
तुम्हारी चीख-पुकार, तुम्हारे मंत्रोच्चार ,
तुम्हारे समस्त उपचार

भंग कर रहे हैं मेरी शांति
आहत कर रहे हैं तुम्हारे असंख्य झूठ
तुम लोग कैसे कर लेते हो -
झूठ का इतना शानदार अभिनय !
बहुत साल गया दो मिनट के मौन के पहले
तुम्हारा पॉंच मिनट का भाषण
हृदय विदीर्ण कर गई
सभागार से निकलते हुए लोगों की हॅंसी
आशा थी कि कम से कम आज सच बोला जाएगा
ऑंखें मूँदे मैं बड़े ध्यान से सुन रहा था-
बहुत अच्छे आदमी थे
सचमुच खुश हो जाता यदि छांट देते
अपने भाषण से सारे अतिरिक्त शब्द और
सिर्फ इतना ही कह देते-
जो चला गया हमारे बीच से
वह भी एक आदमी था
अब हमें उसके बारे में चुप रहना चाहिए
उसके जाने से कोई क्षति नहीं हुई है।"

अनाम लोग

(एक)

ठीक है कि वे अपने काम से काम रखते हैं
दौड़े - भागे नहीं पहुँचते हैं आपके दुःख - दर्द में
आपके सुख के दिनों में ठुमके नहीं लगाते आपके साथ

मतलब रखते हैं आते- जाते दुआ सलाम तक
पर सच ये भी है कि कभी नहीं काटते आपकी लहलहाती फसलें
कभी आपने उन्हें किसी की निंदा करते हुए सुना ?
महाराज!
शिकायत तो आपको सिगरेट पीती हुई लड़कियों से भी है
पर कोई शिकायत नहीं है अपने चरित्रहीन शराबी पुत्तर से
अपने ड्राइंग रूम में जब कहकहों के बीच खोलते हैं औरों की शिकायतों का पुलिंदा
उस समय भूल जाते हैं कितने काले- कारनामें आपके भी दबा कर रखे गए हैं फाइलों में
आप तो अतल में कालिखों को छिपाकर रखते हैं
और दिखाते हैं सिर्फ सफेदी बड़ी चतुराई से
आपसे बेहतर तो वे जरूर हैं जो रखते हैं चौराहे पर अनावृत्त होने की हिम्मत
दुनिया में अब भी बचे हुए हैं कुछ ईमानदार लोग
जिन्हें आप मूर्ख समझते हैं
वे वही हैं जो कभी नहीं बिकते हैं
जैसे हैं हमेशा वैसे ही दिखते हैं।

(दो)

हलवाई मिठाई नहीं खाते
काम निबटाने के बाद
अपने लिए बना लेते हैं चावल -दाल
लोग कहते हैं मिठाइयों की सुगन्ध से भर जाता है उनका मन

घर में जो आती है रसोइया
बनाती है किसिम -किसिम के पकवान
उसे जाते समय मिलती है रात की बची हुई रोटी
क्या उसका भी मन भर जाता है व्यंजनों से?

जो बनाते हैं गगनचुंबी इमारतें
सोते हैं जमीन पर एस्बेस्टस डाल
इमारतें जब सज-धज कर दुल्हन की तरह हो जाती हैं तैयार
वे गृह-प्रवेश तक में नहीं होते आमंत्रित

मेट्रो में सफर करते हुए
दिन-रात काम करते मजदूर याद नहीं आते
लोग विकास -पुरुष को कहते हैं शुक्रिया
पुलों से गुजरते हुए राष्ट्राध्यक्ष ही याद आते हैं

निर्माताओं की कभी हुई है शिनाख्त ?
लोकार्पण के शिलापट्टों में कहीं खुदे दिखते हैं इनके नाम ?
इतिहासकारों की आँखों से वे क्यों हो जाते हैं ओझल ?
जबकि विध्वंसक विराजमान हैं अनेक पृष्ठों पर

महफ़िलों में कभी धूल -पसीने से सने लोगों की बन सकेगी जगह ?
जब भी मिलना हो इनसे चले जाइए निर्माण स्थलों पर

ये वहीं खड़े मिलेंगे पेड़ की तरह
ये रमता जोगी हैं , बहता पानी हैं
जिनलोगों का कोई नाम नहीं होता
उनका नाम काम होता है
सुविधानुसार लोग जोड़ लेते हैं अंत में वाला या वाली।

अतिथि

सुबह - सुबह सहमते हुए
मैंने उनके घर की कॉल बेल बजायी
अपराधी की तरह मैं खड़ा था दरवाजे के बाहर
किवार को पकड़े वह भी खड़े थे हतप्रभ
मेरे हाथ में बैग मिनटों तक लटका रहा

हालचाल पूछने के बजाय
हवा में तिरने लगा एक वाक्य
धीमी गति की गेंद की तरह -
आने के पहले फोन तो कर लिया होता एक बार
मैं तो पहले ही आउटर पर खड़ा था किंकर्तव्यविमूढ़
समझ गया सिग्नल का गूढ़ अर्थ

मैंने घर लौटकर शब्दकोश को पलट कर देखा
सोचा कुछ शब्द आखिरी साँस ले रहे हैं
और दे रहे हैं नये शब्द-शिशुओं को असमय में जन्म
अब शब्दों का जन्म-मरण, हर्ष-विषाद का विषय नहीं है।

संपर्क: 202, असीमलता अपार्टमेंट, मानसरोवर इनक्लेव, एन्सिलीरी चौक के निकट हटिया, रांची-834003 lalancsb@gmail.com